क्षेत्रीय सर्वेक्षण प्रतिवेदन

गुण्डरदेही तहसील "चारभांठा" ग्राम का भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन एवं गाँव में उपलब्ध अधोसंरचना के संदर्भ में भौतिक, सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण

सत्र - 2024-25

एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रस्तुत

भूगोल विभाग

प्रस्तुतकर्ता

मीनाक्षी

एम.ए. भूगोल (चतुर्थ सेमेस्टर)

अनुक्रमांक -2410458007

नामांकन क्रमांक - HU/123/20001003

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही, जिला - बालोद (छ.ग.)

क्षेत्रीय सर्वेक्षण प्रतिवेदन

गुण्डरदेही तहसील "चारभांठा" ग्राम का भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन एवं गाँव में उपलब्ध अधोसंरचना के संदर्भ में भौतिक, सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण

सत्र 2024-2025

एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रस्तुत

भूगोल विभाग

निर्देशक
डॉ. तृप्ति राजपूत
अतिथि प्रध्यापक भूगोल
शासकीय शहीद कौशल यादव
महाविद्यालय, गुण्डरदेही
जिला - बालोद (छ.ग.)

प्रस्तुतकर्ता
मीनाक्षी
एम.ए. भूगोल (चतुर्थ सेमेस्टर)
अनुक्रमांक -2410458007
नामांकन क्रमांक - HU/123/20001003

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही
जिला - बालोद (छ.ग.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है, कि **मीनाक्षी** एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर सत्र – 2024–25 में गुण्डरदेही तहसील ~~मेण्ड्री ग्राम~~ का भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन एवं गाँव में उपलब्ध अधोसंरचना के संदर्भ में भौतिक, सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया है।

क्षेत्रीय प्रतिवेदन कार्य मेरे निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पूर्ण किया है।

प्राचार्य
डॉ. चन्दना बोस
शासकीय शहीद कौशल यादव
महाविद्यालय, गुण्डरदेही
जिला – बालोद (छ.ग.)

PRINCIPAL
Govt. Shahid Kaushal Yadav College
Gunderdehi, Distt.-Balod (C.G.)

निर्देशक 08/05/25
डॉ. तृप्ति राजपूत
अतिथि प्राध्यापक भूगोल
शासकीय शहीद कौशल यादव
महाविद्यालय, गुण्डरदेही
जिला – बालोद (छ.ग.)

घोषणा पत्र

मैं **मीनाक्षी** घोषणा करती हूँ कि शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही, जिला–बालोद (छ.ग.) के एम.ए. भूगोल (चतुर्थ सेमेस्टर) की नियमित छात्रा हूँ । मैं गुण्डरदेही तहसील चारभांठा ग्राम का भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन एवं गाँव में उपलब्ध अधोसंरचना के संदर्भ में भौतिक, सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण किया है । यह मेरे द्वारा एकत्रित आँकड़ों एवं सूचनाओं के आधार पर लिखित मेरी मौलिक कृति है ।

मीनाक्षी

प्रस्तुतकर्ता

मीनाक्षी

एम.ए. भूगोल (चतुर्थ सेमेस्टर)

शासकीय शहीद कौशल यादव

महाविद्यालय गुण्डरदेही

जिला–बालोद (छ.ग.)

दिनांक : 8/5/25

स्थान : गुण्डरदेही

भूमिका

क्षेत्रीय कार्य एवं स्थानीय सर्वेक्षण सदा ही भूगोल के अभिन्न अंग रहे हैं। यह कार्य मूलतः भौगोलिक एवं सामाजिक - आर्थिक परिवेशों में मानवीय क्रियाकलापों का विवेचना एवं विश्लेषण है। क्षेत्रीय अध्ययन किसी भी क्षेत्र की विषय-वस्तु-स्थिति का वास्तविक तथा स्थायी ज्ञान है। जो संबंद्ध क्षेत्र के पर्यटन व अवलोकन द्वारा प्राप्त होता है।

प्रस्तुत क्षेत्रीय अध्ययन प्रतिवेदन में बालोद जिला के ग्राम-चारभांठा का भौगोलिक एवं सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रीय सर्वेक्षण किया गया है। इसे अध्ययन की सुविधा के दृष्टिकोण से विभिन्न अध्यायों में विभाजित किया गया है।

बालोद जिला में ग्राम-चारभांठा का भौगोलिक एवं सामाजिक तत्वों पर प्रकाश डाला गया है, तथा भौगोलिक पृष्ठ के अंतर्गत ग्राम-चारभांठा का सामान्य परिचय , स्थिति-विस्तार, जलवायु, तापमान, उच्चावच, वर्षा, मिट्टी, प्रमुख फसलों एवं संसाधन आदि से संबंधित जानकारी का समावेश किया गया है।

भौगोलिक एवं सामाजिक-आर्थिक तत्वों के अंतर्गत अधिवास, जनसंख्या वितरण, जनसंख्या प्रतिरूप, साक्षरता आदि विशेषताओं से संबंधित जानकारियों का समावेश किया गया है।

प्रस्तुतकर्ता
मीनाक्षी
एम.ए. भूगोल (चतुर्थ सेमेस्टर)
शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही
जिला-बालोद (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ राज्य का सामान्य परिचय

छत्तीसगढ़ राज्य मध्य प्रदेश के दक्षिणी व पूर्वी भाग के 16 जिलों से नवसृजित प्रदेश छत्तीसगढ़ का गठन 1 नवम्बर 2000 को हुआ। यह भारत का 26 वां राज्य है।

छत्तीसगढ़ राज्य का वर्तमान क्षेत्रफल 1,35,191 वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 2,55,40,196 है। यह जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या 2.11% है। जनसंख्या की दृष्टि से छत्तीसगढ़ भारत का 16वाँ बड़ा राज्य है

स्थिति एवं विस्तार :-

छत्तीसगढ़ राज्य भारत के हृदय क्षेत्र मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्व में $17^{\circ}46'$ उत्तरी अक्षांश से $24^{\circ}5'$ उत्तरी अक्षांश तथा $80^{\circ}15'$ पूर्वी देशांतर से $84^{\circ}24'$ पूर्वी देशांतर के मध्य अवस्थित है। इसकी उत्तर दक्षिण लम्बाई 360 कि.मी. तथा पूर्व पश्चिम चौड़ाई 140 कि.मी. है।

छत्तीसगढ़ में वर्षा ऋतु का आगमन 15 जून से 15 सितम्बर तक होता है। वर्षा की प्रकृति मानसूनी विशेषताओं वाली होती है। औसत वार्षिक वर्षा 125 से 150 सेन्टीमीटर तक होती है। छत्तीसगढ़ का मैदान चारों तरफ से पहाड़ी और पठारी क्षेत्रों से घिरा है जिसके कारण आकार कटोरा सदृश है। यहाँ आदिकाल से धान की खेती की जाती है इसलिए धान का कटोरा भी कहा जाता है। यहाँ समृद्ध जैव विविधता के कारण सभी प्रकार के जड़ी-बूटियाँ प्राप्त की जाती है, इसलिए छत्तीसगढ़ को हर्बल स्टेट भी कहा जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य में परम्परागत ऊर्जा के प्रचुर संसाधन उपलब्ध है जिसके कारण छत्तीसगढ़ को ऊर्जा राज्य कहा जाता है।

छत्तीसगढ़ प्रदेश उन असीम संभावनाओं वाले चंद राज्यों में से एक है जिस पर प्रकृति की असीम कृपा है जिसके 20 हजार 363 गाँव में हर गाँव, हर कस्बो में रत्नगर्भी शस्यश्यामला भूमियों की अपारता है। छत्तीसगढ़ प्राचीन सभ्यता कला एवं संस्कृति का प्रतीक है। खनिज सम्पदा की दृष्टि से छत्तीसगढ़ राज्य सम्पन्न राज्य है।

वन सम्पदा की दृष्टि से देश में छत्तीसगढ़ का तीसरा स्थान है। यहाँ वन क्षेत्र 03 राष्ट्रीय उद्यान तथा 11 अभ्यारण्य है। नदियों में मुख्य रूप से महानदी, शिवनाथ, इन्द्रावती, हसदेव, दूध नदी, पैरी, रिहन्द आदि प्रमुख है। जिसमें महानदी अपवाह तंत्र छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा अपवाह है और इस अपवहा तंत्र का सबसे लंबी सहायक नही शिवनाथ नदी है। छत्तीसगढ़ में वर्तमान में 33 जिले हैं।

बालोद जिला का सामान्य परिचय

बालोद जिला 01 जनवरी 2012 को अस्तित्व में आया। 1 जनवरी 2012 को इसे सिविल डिस्ट्रक्ट के रूप में में अधिसूचित किया गया था, हालांकि राजस्व जिले को 10 जनवरी 2012 को घोषित किया गया था। बनने से पहले यह दुर्ग जिले का हिस्सा था। बालोद जिला तान्दुला नदी के तट पर बसा शहर है। बालोद जिला का मुख्यालय बालोद है। दुर्ग मण्डल का जिला है।

बालोद जिले का क्षेत्रफल 3527 वर्गकिलोमीटर 2011 की जनगणना के अनुसार बालोद की जनसंख्या 826165 और जनसंख्या घनत्व 230/कि.मी.^{2} व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। बालोद जिले की साक्षरता दर 74.16 है, महिला पुरूष अनुपात यहाँ पर 1022 महिलायें प्रति 1000 पुरूषों पर है, जिले की जनसंख्या विकासदर 2001 से 2011 के बीच 1.9% रहा है।

बालोद में 11 वीं शताब्दी में कल्चुरी राजाओ का शासन था। जिसका प्रमाण है शहर के प्राचीन गंगासागर के तट पर स्थित माँ शीतला मंदिर के समीप स्थित सत्ती चौरा है। पुरातत्व विदों के अनुसार यह अखण्ड भारत का सबसे प्राचीन सत्ती चौरा में से एक है। सात मंदिरों को समूह में स्थित कपिलेश्वर मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी मेंकल्चुरी राजाओं ने किया था। इतिहास बताता है कि इस कस्बे में बहुत से मंदिर थे साथ ही तालाबों की संख्या भी अधिक थी।

इस वंश के शासकों ने यहाँ महल का निर्माण कराया था जो कि खंडहर में तब्दील हो चुका है। कहा जाता है कि किले के पास स्थित बूढ़ा तालाब में 153 कुएँ थे। किले मे 6 गुप्त मार्ग भी बनाये गये थे जिनका उपयोग राजा अपने लिए करता था। बालोद का इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि 1463 ई.में राजा मानसिंह देव का शासन था उनकी पत्नी का नाम दिव्या था जो कल्चुरी वंश के थे। इस वंश के अंतिम शासक त्रिभुवन शाह थे उनकी 6 रानियाँ थी। एक रात आक्रांताओं द्वारा अचानक किये हमलों में राजा और पाँच रानियाँ मारी गयी, एक रानी बच निकली। राजा त्रिभुवन शाह के मारे जाने के पश्चात महल वीरान हो गया उसी दौरान मण्डला की रानी दुर्गावती अपने शत्रुओं से लोहा लेती वीरगति को प्राप्त हुई। उसके वंशज वहाँ से निकलकर मानपुर अंबागढ़ चौकी के पास बस गए उन्हीं में से एक दामाशाह ने बालोद स्थित किले में अपना काम प्रारंभ किया।

नवगठित जिले के रूप में स्थापित बालोद मराठों के शासनकाल में बालोद परगना था। इस प्रकार बालोद जिले का इतिहास बहुत ही पुराना है और यह विकास की ओर अग्रसर है।

क्षेत्रीय अध्ययन का प्रस्तावना

सर्वेक्षित ग्राम – चारभांठा, गुण्डरदेही से उत्तर तथा दक्षिण की ओर बालोद मार्ग पर स्थित है। यह विकासखण्ड एवं तहसील गुण्डरदेही के जिला–बालोद (छत्तीसगढ़) का प्रशासनिक भाग है । यह एक ग्राम पंचायत है । जिसका शुभारंभ सन् 1986 में हुआ था । इस ग्राम का एक आश्रित ग्राम – पिनकापार भी है । ग्राम का विधानसभा क्षेत्र गुण्डरदेही है । लोकसभा क्षेत्र कांकेर है । यह गुण्डरदेही थाना के अंतर्गत आता है । ग्राम पंचायत में कुल 15 वार्ड है जिसमें 6 पंच ग्राम–पिनकापार तथा 9 पंच ग्राम चारभाठा से निर्वाचित हुए ।

प्रस्तुत भौगोलिक सर्वेक्षण बालोद जिले के गुण्डरदेही तहसील के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत स्थित ग्राम – चारभांठा के भौतिक स्वरूरों एवं सामाजिक–आर्थिक कारकों का मानव पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन से संबंधित है ।

भूगोल एक प्रेक्षणात्मक विज्ञान है, क्योंकि प्राचीन काल से ही भूगोल वेत्ताओं ने क्षेत्र का निरीक्षण या प्रेक्षण करके प्राप्त जानकारी के तथ्यों की व्याख्या की है । निरीक्षण या क्षेत्र अध्ययन का तात्पर्य यह है, कि पहले क्षेत्र में तथ्यों का अवलोकन करना और प्राप्त तथ्यों के आधार पर वर्णन करना । जब हम भूगोल विषय के विकास पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि प्राचीन यूनानियों ने दूर–दूर देशों की यात्राएँ की थी । अपनी यात्राओं के दौरान किए गए अनुभवों को अभिलिखित किया और जहाँ आवश्यकता पड़ी वहाँ सर्वेक्षण भी किए । किसी क्षेत्र की भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसका क्षेत्रीय अध्ययन आवश्यक है जिसका अपना विशेष महत्व है । भूगोल एक क्षेत्रीय विज्ञान है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत के विभिन्न विश्व विद्यालयों में भूगोल विषय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अध्ययन को अभिन्न अंग बनाया गया है ।

भूगोल के विद्यार्थियों के जीवन में क्षेत्रीय अध्ययन का उतना ही महत्व है जितना कि मनुष्य के लिए भोजन, वस्त्र और आवास का । भूगोल के विद्यार्थियों के लिए तो उसका महत्व और अधिक इसलिए बढ़ जाता है । क्योंकि "भूगोल एक जीवित विज्ञान है ।" विद्यार्थी इस विषय के प्रारंभ से ही प्रकृति की गोद में पहुँच जाता है जैसे – मिट्टी , पर्वत, पठार, मैदान, रेगिस्तान, वनस्पति, चट्टानें, भौतिक स्वरूप नदी, झील, झरने एवं सागरों तथा द्वीप आदि विभिन्न सांस्कृतिक पक्षों जैसे – कृषि उद्योग, व्यापार, परिवहन, खनन व अनेक प्रकार के मानवीय क्रियाकलापों का अध्ययन काराया जाता है । परन्तु इन तथ्यों के यथार्थ चित्रण के लिए अवलोकन होता है । इसलिए विश्वविद्यालय के समन्वित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भूगोल के विद्यार्थियों के लिए क्षेत्रीय अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया है ।

सारणी - 1.1

गुण्डरदेही तहसील का तापमान औसत में (से.ग्रे.डिग्री)

क्रमांक	माह	तापमान औसत (से.ग्रे.डिग्री.में)
01.	जनवरी	22.4
02.	फरवरी	25.0
03.	मार्च	29.1
04.	अप्रैल	33.6
05.	मई	36.9
06.	जून	35.6
07.	जुलाई	28.9
08.	अगस्त	29.8
09.	सितम्बर	30.1
10.	अक्टूबर	26.8
11.	नवम्बर	23.9
12.	दिसम्बर	20.8

स्त्रोत :– जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2024–25

उपयुक्त सारणी से स्पष्ट है कि गुण्डरदेही तहसील के औसत वार्षिक तापमान 342.9 से.ग्रे. है तथा यहाँ मई माह में तापमान 36.9 से.ग्रे. सर्वाधिक तापमान है । तहसील उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित होने के कारण यहाँ सूर्य की उत्तरायण स्थित होता है । अतः मई माह सबसे गर्म माह होता है, तथा अप्रेल, मई, जून भी गर्म माह रहता है । तहसील में शीत ऋतु नवम्बर से फरवरी तक होता है । जो सबसे कम तापमान दिसम्बर माह में है जो 20.8 से.ग्रे. रहता है ।

सारणी - 1.3

गुण्डरदेही तहसील में मिट्टी के प्रकार (हेक्टेयर क्षेत्र में)

क्रमांक	मिट्टी के नाम	हेक्टेयर	प्रतिशत
1.	भाठा	9328	27.3%
2.	मटासी	1449	4.2%
3.	डोरसा	1503	4.4%
4.	कन्हार	21167	62.0%
5.	कछार	699	2.0%
	कुलयोग	34146	100%

स्त्रोत :- जिला सांख्यिकी पुस्तिका

अध्ययन के क्षेत्र :-

प्राकृतिक संसाधनों में मिट्टियों का बहुत ही महत्व है। क्योंकि इन्हीं प्रदेश या प्रदेश का सम्पूर्ण कृषि उत्पादन तथा जैव जगत निर्भर करता है। मिट्टियों के निर्माण जलवायु तथा चट्टानों के विखण्डन के फलस्वरूप होता है। इनमें अनेक प्रकार के रासायनिक तत्व एवं वनस्पति के अंश पाये जाते हैं। फलतः विभिन्न जलवायु दशाओं और विभिन्न चट्टानों से बनी मिट्टियों में न तो एक रूपता पायी जाती है और न ही उनकी उर्वरा क्षमता एक सी होती है।

छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है। इसलिए मिट्टी यहाँ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। यहाँ संरचनात्मक विविधता धरातलीय उच्चावच तथा वर्षा के वितरण का मिट्टियों के निर्माण में स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

तहसील में मिट्टी के प्रकार

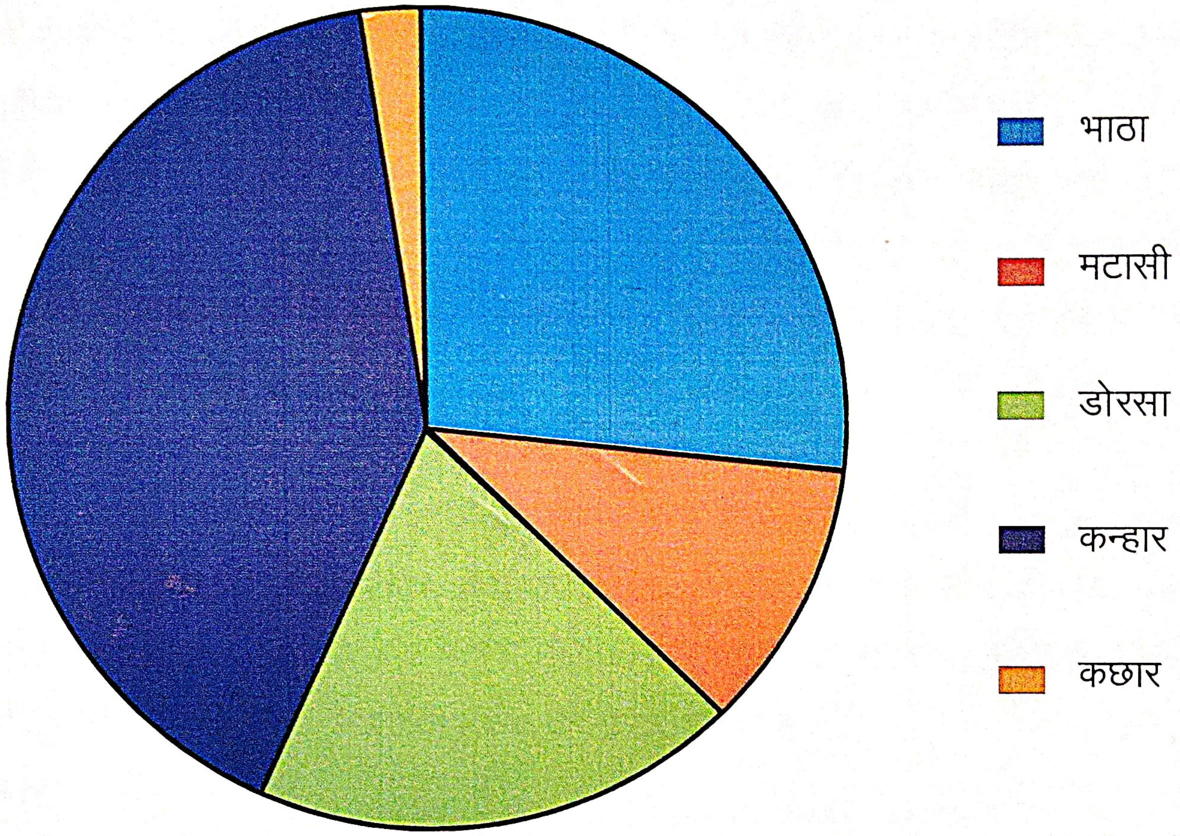

स्त्रोत :– जिला सांख्यिकी पुस्तिका

एक ओर बढ़ती हुई आबादी जनसंख्या के प्रतिरूप व सामाजिक जटिलताओं ने इस प्रकार के परिवर्तनों में अधिक बढ़ोत्तरी की है। भूमि उपयोग में परिवर्तन में जनसंख्या में बढ़ोत्तरी के कारण अधिक बढ़ रही है।

उद्योग -

विनिर्माण उद्योग स्थान में की जाने वाली उदाहरण सम्पूर्ण प्रक्रिया का नाम है। जिसमें उपलब्ध पदार्थ (कच्चा माल) को अधिक उपयोगी एवं मूल्यवान बनाने के लिए उनका रूप परिवर्तन किया जाता है।

जैसे – कच्चे लोहे को विभिन्न प्रकारों के औजारों मशीनों का निर्माण किया जाता है।

उद्योग का अर्थ –

उद्योग से आशय ऐसी उच्च आर्थिक क्रियाओं से है जिनका संबंध वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं उनके सेवाओं से होता है। जब तक सामान वस्तुओं उत्पादन में अनेक फार्म लगी होती है, तो यह सभी कार्य मिलकर उद्योग कहलाती है।

उद्योग की परिभाषा :-

1. प्रो. काले के अनुसार – "कुटीर उद्योग इस प्रकार के संगठन को कहते हैं, जिसके अन्तर्गत स्वतंत्र उत्पाद कर्ता अपनी पूँजी लगाता है और अपने श्रम के कुल उत्पादन का स्वयं अधिकारी होता है।"

2. भारतीय योजना आयोग के अनुसार – "विनिर्माण उपयोग वह है जिसमें कम उपयोग वस्तुओं को अधिक उपयोगी प्रदान करने की क्रिया की जाती है।"

उद्योग का महत्व :-

किसी भी देश की प्रगति वहाँ के भौगोलिक विकास पर निर्भर करती है। इसलिए जो देश जितना अधिक अपने यहाँ उपलब्ध या आयात किए गए कच्चे माल का अधिकतम उपयोग करके विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करता है, वह देश विकसित एवं सम्पन्न होती है।

गुण्डरदेही तहसील के अन्तर्गत पायेजाने वाले प्रमुख उद्योग निम्नलिखित है।

1. बुनकर उद्योग 2. बर्फ की फैक्ट्री 3. आरा मशीन 4. हस्तकला उद्योग

जैव-विविधता

जैव विविधता मुख्य रूप से एक मापदंड है जिसमें अलग–अलग तरह के पेड़ पौधे और पशु पक्षी एक साथ रहते हैं।

हर किस्म की वनस्पति और पशु वर्ग पृथ्वी के वातावरण को बेहतर बनाने में अपना अमूल्य योगदान देते हैं जिससे आखिरकार पृथ्वी पर जीवन समृद्ध शाली बनता है। ये सभी प्रजातियाँ एक–दूसरे की मूलभूत जरूरतों को पूरा करती है जिससे एक समृद्धशाली जैव विविधता का निर्माण होता है।

जैव विविधता का अर्थ :–

जैव विविधता का अर्थ है विभिन्न प्रकार के जीवन जो आपको एक ही क्षेत्र में मिलेंगे – जानवरों, पौधों, कवक और यहाँ तक कि बैक्टिरिया जैसे सूक्ष्मजीवों की विविधता जो हमारी प्राकृतिक दुनियाक को बनाते हैं।

जैव विविधता की परिभाषा :–

1. एक ही स्थान पर पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जीव की प्रजाति को जैव विविधता कहते हैं।
2. वाल्टर रोसेन के अनुसार – "जैव विवधता से सूक्ष्म जीवों की विभिन्नताओं से है।"
3. सी.जे.वैषो के अनुसार – "किसी निश्चित प्रजाति की विभिन्नता जैव–विविधता है।"

जैव विविधता का महत्व :–

1. जैव विविधता प्रकृति को संतुलित रखती है।
2. जैव विविधता सभी सजीव के लिए आहार का स्त्रोत है।
3. मानवीय आवश्यकता जैसे :– भोजन कपड़ा, आवास, ईंधन इत्यादि की पूर्ति जैव विविधता से ही संभव है।

(खण्ड – ब)

चयनित ग्राम–चारभांठा का भौगोलिक एवं सामाजिक–आर्थिक सर्वेक्षण

वर्ष 2024–25

01. स्थिति विस्तार :–

सर्वेक्षित ग्राम–चारभांठा छत्तीसगढ़ राज्य के जिला बालोद, तहसील गुण्डरदेही का एक छोटा सा गांव है। यह ग्राम – चारभांठा, ईरागुड़ा से 2 कि.मी., खलारी से 2 कि.मी. मुंडेरा से 3 कि.मी. माहुद से 3 कि.मी. चारभांठा के नजदीक का गाँव है। चारभांठा दक्षिण की ओर गुरूर तहसील, पूर्व की ओर पाटन, पश्चिम की ओर डौण्डीलोहारा तहसील से घिरा हुआ है।

02. उच्चावच :–

धरातलीय उच्चावच के लक्षणों का अध्ययन के लिए सर्वप्रथम स्थानीय उंचाई, समोच्च रेखाओं, मैदान , पठार तथा पहाड़ियों का अध्ययन किया जाता है, उच्चावच ही उस क्षेत्र के अपवाह तंत्र को निर्धारित करता है। चयनित ग्राम – चारभांठा का धरातल समतल है।

03. जनसंख्या :–

ग्राम – चारभांठा एक छोटा सा गांव है, यहां जनसंख्या मध्यम रूप है, यहां की जनसंख्या 2011 के अनुसार 965 है जिसमें 250 परिवार सम्मिलित हैं। व्यक्तिगत सर्वेक्षण द्वारा 50 परिवारों का अध्ययन किया जिसमें 134 महिला एवं 161 पुरूष है जिनकी कुल संख्या 295 है।

04. जलवायु :–

चयनित ग्राम – चारभांठा उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु प्रदेश के अंतर्गत आता है , जलवायु ऋतुओं के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया है ।

1. शीत ऋतु – 15 नवम्बर से 15 फरवरी तक ।
2. ग्रीष्म ऋतु – 15 फरवरी से 15 जून तक ।
3. वर्षा ऋतु – 15 जून से 15 नवम्बर तक ।

ग्राम – चारभांठा की जलवायु मुख्यतः मानसूनी है।

शैक्षणिक स्तर

साक्षरता वह वैयक्तिक गुण है, जो किसी व्यक्ति के पढ़ने और लिखने की योग्यता को प्रकट करता है। साक्षरता मनुष्य के सोच-विचार और कार्य करने की योग्यता को पढ़ाती है और उसे नवीन खोजों की दिशा में आगे बढ़ाती है, जिससे देश में सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

साक्षरता का शाब्दिक अर्थ है, व्यक्ति के साक्षर होने का गुण। सामान्य अर्थ साक्षरता वह है, जो किसी भाषा में पढ़ना व लिखना जानता है। भारत के संदर्भ में साक्षरता वह है जो किसी एक भाषा में पढ़ना व लिखना जानता हो तथा अपना हस्ताक्षर कर लेता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार :-

"कोई भी व्यक्ति किसी भाषा में लिखे गए वाक्य को पढ़ सके एवं अंकों को समझ सके साक्षर कहलता है।"

शिक्षित :-

सामान्यतः एक या एक से अधिक भाषा को पढ़ने लिखने तथा समझने की कला को साक्षरता कहा जाता है। साक्षरता का अनुपात आर्थिक विकास का आधार बनता है।

अशिक्षित :-

सामान्यतः उस व्यक्ति को अशिक्षित माना जाता है, जो व्यक्ति किसी भी एक भाषा में लिख या पढ़ नहीं सकता ऐसे व्यक्ति अशिक्षित माने जाते हैं।

सारणी क्रमांक - 2.5

ग्राम - चारभांठा में सुविधाएँ

आँगनबाड़ी	प्राथमिक शाला	माध्यमिक शाला	सार्वजनिक सुविधा	खेल का मैदान	योग
1	1	0	0	0	2

मकानों का स्वामित्व एवं भू-खण्ड का आकार

सर्वेक्षित ग्राम – चारभांठा में 50 परिवारों के पास में स्वयं के मकान में रहने वाले लोगों की सबसे अधिक प्रतिशत है। यहाँ किराये पर या दूसरों के घर में कोई निवासरत नहीं है। यहाँ के सभी परिवारों के पास स्वयं का मकान है तथा मकानों का स्वामी स्वयं है।

सर्वेक्षित ग्राम में प्रायः स्वयं का मकान है। जिसमें लोगों द्वारा अपने दैनिक कार्यक्रम एवं दिनचर्या का कार्य करता है। यहाँ गाँव भू–खण्ड आकार में सर्वाधिक 30–35 वर्ग वाले भी भू–खण्ड आकार की है। यहाँ गाँव में अन्य पिछड़ा वर्ग के पास कम भूमि है। प्राचीन समय से यहाँ लोग निवासरत है। इस गाँव के लोगों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिला है। इसलिए वर्तमान में पक्के मकान अब देखने को मिलता है। इस गाँव में लोगों की एक परिवार में संख्या 6–7 पायी गई है। इसलिए मकान आवश्यकतानुसार ही बनाया गया है। यह गाँव छोटा सा है और जनसंख्या भी समान है। इस गाँव में अन्य पिछड़ा वर्ग के साथ अनुसूचित जनजाति के पास सर्वाधिक भूमि है। यहाँ पर लोग पुराने समय से निवासरत हैं।

सारणी क्रमांक 4.2

सर्वेक्षित ग्राम – पेण्ड्री में मकानों का स्वामित्व

किराया	स्वयं	कुल संख्या
00	50	50

स्त्रोत :– व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2024–25

सर्वेक्षित ग्राम में मकानों के स्वामित्व की संख्या 50 है। सर्वेक्षित गांव में स्वयं के पास मकान है जो स्वयं स्वामित्व है।